

| विषयः | पत्रम् |
|---|--------|
| ● शङ्कायाः स्वरूपम् | १४ |
| राजकुलपरिचये लाभः | १५ |
| हेमन्तवर्णनम् | १५ |
| शङ्कात्यागोपदेशः | १७ |
| ३ काङ्क्षातिचारप्रक्रमे नागदत्तकथानकम् | १७-२० |
| ● काङ्क्षायाः स्वरूपम् | १७ |
| उपवनवर्णनम् | १८ |
| काङ्क्षात्यागोपदेशः | २० |
| ४ विचिकित्सातिचारप्रक्रमे गङ्ग-वसुमत्योः कथानकम् | २०-२४ |
| ● विचिकित्सायाः स्वरूपम् | २० |
| सत्पुरुषपन्थाः | २१ |
| नागवर्णनम् | २२ |

| विषयः | पत्रम् |
|--|--------|
| गुणोपबृंहोपदेशः | ३३ |
| ७ स्थिरीकरणातिचारप्रक्रमे भवदेवराजर्षि- कथानकम् | ३३-४० |
| ● स्थिरीकरणस्य स्वरूपम् | ३३ |
| देशदर्शनम् | ३४ |
| ● राजलक्षणानि | ३४ |
| युद्धवर्णनम् | ३६ |
| पुरुषप्रकाराः | ३९ |
| स्थिरीकरणोपदेशः | ४० |
| ८ वात्सल्यगुणे धनसाधुकथानकम् | ४०-४७ |
| ● वात्सल्यस्य स्वरूपम् | ४० |
| ● धर्मात्मनां भोजनसमये विचारणा | ४१ |

| विषयः | पत्रम् |
|---|--------|
| विचिकित्सात्यागोपदेशः | २४ |
| ५ मूढदृष्टित्वातिचारप्रक्रमे शङ्खकथानकम् | २४-२९ |
| ● मूढदृष्टित्वस्य स्वरूपम् | २४ |
| प्रावृद्धवर्णनम् | २५ |
| आत्महत्यायां दोषोपदर्शनम् | २७ |
| ● मूढदृष्टित्वं तद्विपाकञ्च | २८ |
| मूढदृष्टित्वत्यागोपदेशः | २९ |
| ६ उपबृंह्यातिचारप्रक्रमे रुद्राचार्यकथानकम् | २९-३३ |
| ● उपबृंह्यायाः स्वरूपम् | २९ |
| ● जीवादीनि सप्त तत्त्वानि तत्संख्याविषयकं वादस्थलं च | ३० |
| ● सङ्घादेशपत्रम् | ३१ |
| ● छिकाविचारः | ३२ |

| विषयः | पत्रम् |
|---|--------|
| ● रत्नलक्षणानि | ४४ |
| वात्सल्यविधानोपदेशः | ४६ |
| ९ प्रभावनाचारे अचलकथानकम् | ४७-५५ |
| ● प्रभावनायाः स्वरूपम् | ४७ |
| ● मृत्युज्ञानचिह्नानि | ४८ |
| श्मशानवर्णनम् | ४९ |
| ● सामुद्रिकम् | ५० |
| तपस्विमुनेरात्मकथा | ५२ |
| राजधर्मनिष्ठस्यैव राज्ञः प्रजाकृतधर्मषष्ठभागस्य प्राप्तिः | ५३ |
| ● अष्टप्रातिहार्यस्वरूपम् | ५४ |
| प्रभावनोपदेशः सम्यक्त्वमाहात्म्यं च | ५५ |

| विषयः | | पत्रम् | विषयः | | पत्रम् |
|-------|--|--------|-------|--|--------|
| १० | पञ्चनमस्कारे श्रीदेवनृपकथानकम् | ५५-६७ | ● | चैत्यविधापनाधिकारी तद्विधिश्च | ६७ |
| ● | पञ्चनमस्कारस्य स्वरूपं तन्माहात्म्यं च युद्धवर्णनम् | ५५ | ● | सूत्रधारस्य प्रतिपत्तिः | ७१ |
| | द्वन्द्वयुद्धम् | ५६ | ● | ध्वजारोपणविधिः | ७२ |
| ● | अष्टाष्टौ अकर्त्तव्य-कर्त्तव्य-मोक्तव्य-धर्त्तव्य-अविश्वस्यानि | ५७ | | स्वयम्भूदत्तकथानकम् | ७३ |
| | हीनबलस्य राज्ञो राजनीतिः | ५८ | ● | मुनियोग्यानि जिनचैत्यविषयाणि नव त्रिकाणि | ७६ |
| | राजलक्ष्म्याः चपलत्वम् | ६१ | ● | वेदापौरुषेयत्ववादः | ७६ |
| ● | पञ्चनमस्काराराधनविधिः-उपधानविधिः | ६२ | | जिनचैत्यविधापनस्य गुणाः तद्विधापनोपदेशश्च | ७७ |
| | नमस्कारमाहात्म्ये हेमप्रभदेवसम्बन्धः | ६३ | १२ | जिनविम्बप्रतिष्ठाप्रक्रमे महाराजपत्रक-थानकम् | ७८-९० |
| | पञ्चनमस्कारस्मरणस्य फलम् | ६६ | ● | जिनविम्बविधापनं तद्विधिश्च | ७८ |
| ११ | चैत्याधिकारे विजयकथानकम् | ६७-७८ | ● | प्रतिष्ठायाः त्रैविध्यम् | ७८ |
| | | | ● | धर्मतत्त्वपरामर्शः | ७९ |

कथारत्नकोशस्थानां कथानकादीनामनुक्रमणिका ।



धर्माधिकारिसामान्यगुणवर्णनाधिकारः

| विषयः | | पत्रम् | विषयः | | पत्रम् |
|-------|--|--------|-------|--|--------|
| | सम्यक्त्वपटलम् | १-५५ | ● | एकावलीहारस्य उत्पत्तिः | ७ |
| १ | सम्यक्त्वाधिकारे नरवर्मनृपकथानकम् | १-१४ | ● | सम्यक्त्वस्य स्वरूपम् | ९ |
| | मङ्गलं ग्रन्थनाम अभिषेयं च | १-२ | ● | देवतत्त्वं गुरुतत्त्वं च | ९ |
| ● | धर्माधिकारिणां सामान्यगुणा विशेषगुणाश्च | २ | ● | गुरुतत्त्वव्यवस्थापनविषयकं वादस्थलम् | १० |
| | सामान्यगुणानां माहात्म्यम् | २ | ● | धर्मतत्त्वम् | ११ |
| ● | सम्यक्त्वम् | २ | | दुर्विदग्धस्य आसधरश्राद्धस्य पूर्वभवकथानकम् | १२ |
| ● | राजसंसदि धर्मसंवादः | ३ | | सुवेगदेवेन नरवर्मनृपस्य सम्यक्त्वदाढ्यस्य परीक्षणम् नृपं प्रति निर्जरस्याशीर्वचश्च | १३ |
| | नरवर्मनृपपुत्रहरिदत्तस्य मदनदत्तवणिजश्च पूर्वभवकथानकम् | ६ | २ | शङ्कातिचारदोषे धनदेवकथानकम् | १४-१७ |

| विषयः | पत्रम् |
|---|--------|
| १५ शास्त्रश्रवणाधिकारे श्रीगुप्तकथानकम् | १०९-१८ |
| ● जिनागमस्य श्रवणम् | १०९ |
| शुकस्य कथानकम् | ११६ |
| शास्त्रश्रवणस्य फलं तदुपदेशश्च | ११८ |
| १६ ज्ञानदानावसरे धनदत्तकथानकम् | ११८-२६ |
| ● ज्ञानदानस्य स्वरूपम् | ११८ |
| ज्ञानान्तरायकर्मनिवारणोपायः | १२४ |
| ज्ञानदानस्य फलं तदुपदेशश्च | १२५ |
| १७ अभयप्रदानप्रस्तावे जयराजर्विकथानकम् | १२६-३३ |
| ● अभयदानस्य स्वरूपम् | १२६ |
| जीवितव्यप्रियत्वविषये चौराहरणम् | १२९ |
| १८ यत्युपष्टम्भदानाधिकारे सुजयराजर्विकथा- नकम् | १३३-४२ |

| विषयः | पत्रम् |
|---|--------|
| ● माध्यस्थगुणस्य स्वरूपम् | १५० |
| रक्तत्वे शिवस्य कथानकम् | १५१ |
| द्विष्टत्वे शशिन आहरणम् | १५२ |
| मूढत्वे शङ्खस्याहरणम् | १५३ |
| अरक्त-द्विष्ट-मूढानां तत्त्वज्ञानाप्तिः | १५३ |
| ● हस्तितापसमतस्य निरसनम् | १५४ |
| ● शौचवादमतस्य प्रतिक्षेपणम् | १५५ |
| ● अनन्तकायादीनां सदोषत्वम् | १५५ |
| माध्यस्थगुणस्य माहात्म्यम् | १५७ |
| २१ सामर्थ्यगुणचिन्तायां अमरदत्तकथानकम् | १५७-६३ |
| ● सामर्थ्यगुणस्य स्वरूपम् | १५७ |
| वसन्तस्य वसन्तक्रीडायाश्च वर्णनम् | १५८ |
| देवलकथानकम् | १५९ |

| विषयः | पत्रम् |
|--|--------|
| ● उपष्टम्भदानस्य स्वरूपम् | १३३ |
| प्रवहणम् | १३४ |
| अनन्तवीर्यमुनेः सिंहनादस्य च सम्बन्धः | १३६ |
| उपष्टम्भदानस्य माहात्म्यम् | १४१ |
| १९ कुग्रहत्यागे विमलोपाख्यानकम् | १४२-५० |
| ● कुग्रहस्य स्वरूपम् | १४२ |
| ● जिनप्रतिमापूजादिविषयकं चार्चिकम् | १४४ |
| हरेः कथानकम् | १४४ |
| ● सामान्यधर्मोपदेशः | १४६ |
| ● सूत्रोक्तचैत्यवन्दना-द्रव्यपूजादिविषयकं चार्चिकम् | १४६ |
| कुग्रहत्यागोपदेशः | १५० |
| २० माध्यस्थगुणचिन्तायां पुरोहितसुतनारायण- कथानकम् | १५०-५७ |

| विषयः | पत्रम् |
|---|--------|
| ● शुश्रूषाया माहात्म्यम् | १६० |
| ● धर्मोपास्तेः मुख्यत्वम् | १६२ |
| सामर्थ्यगुणस्य माहात्म्यम् | १६३ |
| २२ धर्मार्थिव्यतिरेकचिन्तायां सुन्दरकथानकम् | १६३-६९ |
| ● अर्थित्वगुणस्य स्वरूपम् | १६३ |
| प्रावृद्धर्णनम् | १६४ |
| संवरश्रेष्ठिपूर्वभवकथानकम् | १६५ |
| ● अतिथिसत्कारः | १६६ |
| रात्रिवर्णनम् | १६६ |
| ● अनर्थिनः स्वरूपम् | १६९ |
| २३ आलोचकपुरुषव्यतिरेके धर्मदेवकथानकम् | १६९-७५ |
| ● आलोचकस्य स्वरूपम् | १६९ |
| अनालोचितकारित्वे दोषोपदर्शनम् | १७५ |

| विषयः | पत्रम् |
|---|--------|
| २४ उपायचिन्तायां विजयदेवकथानकम् | १७६-८३ |
| ● उपायचिन्तायाः स्वरूपम् | १७६ |
| उपायदर्शित्वस्य फलम् | १८३ |
| २५ उपशान्तप्रक्रमे सुदत्तकथानकम् | १८३-९१ |
| ● उपशान्तगुणस्य स्वरूपं कषायाणां दोषाश्च | १८३ |
| ● जिनस्तवनम् | १८५ |
| कषायविपाके रोरस्य तत्पुत्राणां च पूर्वभव- वृत्तगर्भितं कथानकम् | १८६ |
| ● कषायाणां विपाकः | १८८ |
| ● कषायविजयभावना | १८९-९० |
| उपशान्ता-ऽनुपशान्तयोः फलम् | १९१ |
| २६ दक्षत्वगुणचिन्तायां सुरशेखरराजपुत्रकथा- नकम् | १९१-९६ |

| विषयः | पत्रम् |
|--|--------|
| ● रत्नत्रयी | ७९ |
| ● देवतत्त्वविचारः | ८१ |
| ● जिनबिम्बप्रतिष्ठाविधिः | ८६ |
| ● साधूनां प्रतिष्ठाविधिविधापनस्यादुष्टत्वम् | ८८ |
| ● कर्मणां बलिकत्वम् | ८९ |
| ● मत्स्य-पद्मानां बलयाकारवर्जं सर्वेऽप्याकाराः | ८९ |
| ● जिनप्रतिमाकारं महापद्मं दृष्ट्वा पद्मनृपजीवमक- रस्य जातिस्मरणम् | ९० |
| जिनबिम्बविधापन-प्रतिष्ठापनयोः माहात्म्यम् | ९० |
| १३ जिनपूजाधिकारे प्रभङ्करकथानकम् | ९१-१०२ |
| ● जिनपूजायाः स्वरूपम् | ९१ |
| ● सम्यक्त्वप्राप्तेः स्वरूपम् | ९३ |
| ● मनुष्यजन्मादिधर्मसामग्र्याः सफलीकरणोपदेशः | ९३ |

| विषयः | पत्रम् |
|--|---------|
| ● दक्षत्वगुणस्य स्वरूपम् | १९१ |
| दक्षत्वगुणस्य माहात्म्यम् | १९६ |
| २७ दाक्षिण्यगुणचिन्तायां भवदेवकथानकम् | १९६-२०१ |
| ● दाक्षिण्यगुणस्य स्वरूपम् | १९६ |
| परोपकारी | १९९ |
| दाक्षिण्यगुणस्य माहात्म्यम् | २०१ |
| २८ धैर्यगुणचिन्तायां महेन्द्रनृपकथानकम् | २०१-७ |
| ● धीरत्वस्य स्वरूपम् | २०१ |
| धैर्यगुणस्य माहात्म्यम् | २०७ |
| २९ गाम्भीर्यगुणचिन्तायां विजयाचार्यकथानकम् | २०७-१२ |
| ● गाम्भीर्यगुणस्य स्वरूपम् | २०७ |
| गाम्भीर्यस्य माहात्म्यं तद्भावा-ऽभावयोः गुण- दोषौ च | २११ |

| विषयः | पत्रम् |
|---|--------|
| निष्पुण्यानां मन्त्राद्यसिद्धिः तद्विषये सोमस्य कथानकं च | ९५ |
| ● जिनपूजायाः विधिः | ९८ |
| ● अष्टप्रकारी पूजा | ९८ |
| ● अधिकार्यपेक्षया विविधैर्द्रव्यैर्जिनपूजनस्या- दूषितत्वम् | १०० |
| जिनार्चनस्य फलम् | १०२ |
| १४ देवद्रव्यचिन्ताधिकारे भ्रातृद्वयकथानकम् | १०२-९ |
| ● देवद्रव्यस्य स्वरूपं तद्दृष्टिश्च | १०२ |
| साधारणद्रव्यम् | १०२ |
| करुणविलापः | १०४ |
| ● देवद्रव्यभक्षणविपाकः | १०६ |
| देवद्रव्यरक्षणोपदेशः | १०९ |

| विषयः | पत्रम् |
|--|--------|
| बन्धातिचारे मिहिरकथानकम् | २४३ |
| वधातिचारे वरुणकथानकम् | २४४ |
| छविच्छेदे लीलावतीकथानकम् | २४४ |
| अतिभारारोपणे मधुकथानकम् | २४५ |
| भोज्यव्यवच्छेदे धरकथानकम् | २४५ |
| ● व्रतस्य विशुद्धिः, अतिचार-भङ्गौ यतना च प्राणवधविरतेः माहात्म्यम् | २४६ |
| ३५ द्वितीयाणुव्रतस्थूलमृषावादविरतिगुणचिन्तायां सागरकथानकम् | २४७-५४ |
| ● सत्यवचनस्य स्वरूपम् | २४७ |
| माण्डव्यर्षेश्वरितम् | २४९ |
| ● स्थूलमृषावादविरतेः स्वरूपं तदतिचाराः तद्भङ्गातिचारयोः स्वरूपं च | २५० |

| विषयः | पत्रम् |
|--|---------|
| ● स्वदारसन्तोषिणः परदारवर्जिनश्चाश्रित्यातिचारविभागः | २६५ |
| ● पुण्यस्य पापस्य च द्वैविध्यम् | २६७ |
| पारदार्यदोषावेदनद्वारा तत्परिहारोपदेशः | २६८ |
| ३८ पञ्चमाणुव्रतस्थूलपरिग्रहविरतिगुणचिन्तायां धरणकथानकम् | २६९-७६ |
| ● स्थूलपरिग्रहविरतेः स्वरूपम् तदतिचाराश्च परिग्रहपरिमाणविरतेः फलम् | २६९-२७४ |
| ३९ प्रथमदिग्विरतिगुणव्रतचिन्तायां शिवभूति-स्कन्दयोरारूपायानकम् | २७७-८४ |
| ● दिग्विरतिगुणव्रतस्य स्वरूपम् मित्रम् | २७७ |
| त्रीणि गुणव्रतानि | २७७-९९ |

| विषयः | पत्रम् |
|---|--------|
| मृषावादातिचारविषये सुरथज्ञातम् | २५० |
| ● विरतिग्रहणे दोषापादनविषयकं चार्चिकम् असत्यवाग्विपाकदर्शनद्वारा तस्यागोपदेशः | २५२ |
| ३६ तृतीयाणुव्रतस्थूलादत्तादानविरतिगुणचिन्तायां फरुसरामकथानकम् | २५४-६१ |
| ● अदत्तविरतेः स्वरूपम् | २५४ |
| धर्मयशोमुनेश्वरितम् | २५६ |
| ● अदत्तविरतेः स्वरूपं तदतिचाराश्च अदत्तादानस्य दोषाः तद्विरतेर्गुणाश्च | २५६ |
| ३७ चतुर्थाणुव्रतस्थूलमैथुनविरतिगुणचिन्तायां सुरप्रियकथानकम् | २६१-६९ |
| ● मैथुनविरतेः स्वरूपम् | २६१ |
| ● चतुर्थाणुव्रतस्य स्वरूपं तदतिचाराश्च | २६५ |

| विषयः | पत्रम् |
|--|--------|
| खल-सज्जनयोः स्नेहः | २७८ |
| ● प्रश्न-प्रहेलिकादिका गोष्ठी | २७९ |
| देवपालराजकुमारपूर्वभवकथानकम् | २८० |
| ● अकालदन्तोद्गमकल्पः | २८१ |
| दुर्बलचरणस्य पूर्वभवकथानकम् | २८२ |
| ● दिग्विरतेः स्वरूपं तदतिचाराश्च दिग्विरतेरुपदेशः | २८३ |
| ४० द्वितीयभोगोपभोगविरतिगुणव्रतचिन्तायां सकुटुम्बमेहश्रेष्ठिकथानकम् | २८५-९१ |
| ● भोगोपभोगगुणव्रतस्य स्वरूपम् | २८५ |
| मखसूदनमुनेरात्मकथा | २८६ |
| ● भोगोपभोगव्रतस्य स्वरूपं तदतिचाराश्च | २८६ |
| ● पञ्चदश कर्मादानानि | २८७ |

| विषयः | पत्रम् |
|---|---------|
| भोगोपभोगविरतेरुपदेशः | २९१ |
| ४१ तृतीयअनर्थदण्डविरतिगुणव्रतचिन्तायां चि- त्रगुप्तकथानकम् | २९१-९९ |
| ● अनर्थदण्डविरतिगुणव्रतस्य स्वरूपम् | २९१ |
| ● दानविधानम् | २९३ |
| ● अनर्थदण्डविरतेः स्वरूपं तदतिचाराश्च | २९६ |
| अनर्थदण्डदोषोपदर्शनद्वारा तत्परिहारोपदेशः | २९८ |
| चत्वारि शिक्षाव्रतानि | २९९-३२६ |
| ४२ प्रथमसामायिकशिक्षाव्रतप्रक्रमे मेघरथ- कथानकम् | २९९-३०६ |
| ● सामायिकस्य स्वरूपम् | २९९ |
| ● सामायिकव्रतस्य स्वरूपं तदतिचाराश्च | ३०४ |
| सामायिकव्रतस्य माहात्म्यम् | ३०५ |

| विषयः | पत्रम् |
|---|--------|
| ३० इन्द्रियपञ्चकविजय-तद्व्यतिरेकवर्णनायां सुजसश्रेष्ठि-तत्सुतकथानकम् | २१२-१७ |
| ३१ पैशुन्यगुण-दोषचिन्तायां धनपाल-बालचन्द्र- कथानकम् | २१७-२५ |
| ● पैशुन्यस्य स्वरूपम् | २१७ |
| रामदेवमुनेरात्मकथा | २१८ |
| आदित्यब्राह्मणसम्बन्धः | २२१ |
| पैशुन्यत्यागोपदेशः | २२४ |

द्वितीयो धर्माधिकारिविशेषगुणवर्णनाधिकारः

| विषयः | पत्रम् |
|--|--------|
| पञ्च अणुव्रतानि | २४०-७६ |
| ३४ प्रथमाणुव्रतस्थूलप्राणातिपातविरतिगुणचि- न्तायां यज्ञदेवकथानकम् | २४०-४७ |

| विषयः | पत्रम् |
|--|--------|
| ४३ द्वितीयदेशावकाशिकशिक्षाव्रतविषये पव- नञ्जयकथानकम् | ३०६-१३ |
| ● देशावकाशिकस्य स्वरूपम् | ३०६ |
| ● देशावकाशिकव्रतस्य स्वरूपं तदतिचाराश्च | ३११ |
| देशावकाशिकस्य स्वरूपम् | ३१३ |
| ४४ तृतीयपौषधव्रतशिक्षाव्रतविचारणायां ब्रह्म- देवकथानकम् | ३१३-१८ |
| ● पौषधस्य स्वरूपम् | ३१३ |
| ● पौषधव्रतस्य स्वरूपं तदतिचाराश्च | ३१४ |
| क्षेमङ्करस्य कथानकम् | ३१५ |
| तस्करचतुष्ककथानकम् | ३१८ |
| पौषधव्रतस्य माहात्म्यम् | ३१८ |

| विषयः | पत्रम् |
|--|--------|
| ३२ परोपकारद्वारचिन्तायां भरतनृपकथानकम् | २२५-३२ |
| ● परोपकारित्वस्य स्वरूपम् | २२५ |
| पारासरस्य सम्बन्धः | २३० |
| परोपकारकरणोपदेशः | २३२ |
| ३३ विनयद्वारव्यावर्णनायां सुलसकथानकम् | २३२-३९ |
| ● विनयस्य स्वरूपम् | २३२ |
| ● मुनिदानस्य फलम् | २३७ |
| विनयगुणस्य माहात्म्यम् | २३९ |

| विषयः | पत्रम् |
|--|--------|
| ● प्राणवधविरतेः स्वरूपम् | २४० |
| ● स्थूलप्राणातिपातविरतेः स्वरूपं तदतिचाराश्च | २४३ |
| ● अतिचार-भङ्गयोः स्वरूपम् | २४३ |

| | |
|--|--------|
| विषयः | पत्रम् |
| ● प्रत्याख्यानस्य स्वरूपम् | ३४३ |
| ● प्रत्याख्यानफले दामन्नककथानकम् | ३४५ |
| ● प्रत्याख्यानस्य शुद्धशुद्ध्यादि तन्माहात्म्यं च | ३४९ |
| ५० प्रव्रज्यार्थचिन्तायां श्रीप्रभ-प्रभाचन्द्र- कथानकम् | ३४९-६० |
| ● प्रव्रज्यायाः स्वरूपं समर्था-ऽसमर्थप्रव्रज्ये च | ३४९ |
| सनत्कुमारनाटकप्रबन्धः | ३५० |
| युद्धवर्णनम् | ३५३ |

प्रमाणप्रकाशः
अनन्तनाथस्तोत्रम्

१
७

| | |
|---|--------|
| विषयः | पत्रम् |
| ● प्रव्रजितं प्रति गुरोः अनुशिष्टिः | ३५५ |
| ● प्रव्रज्याप्रतिपत्तिनिषेधविषयकं चार्विकम् | ३५६ |
| ● आत्मानुशासनम् | ३५७ |
| ● संलेखनायाः स्वरूपम् अतिचाराश्च | ३५८ |
| ● संस्तारकप्रव्रज्या | ३५९ |
| प्रशस्तिः | ३५९ |
| ग्रन्थोपसंहारः | ३६० |

स्तम्भनकपार्श्वनाथस्तोत्रम्
वीतरागस्तवः

८
९

कथारत्नकोशस्य शुद्धिपत्रम्

| | | | | | | | |
|------------------|-----------------|--------|----------|-----------|-------------|--------|----------|
| अशुद्धिः | शुद्धिः | पत्रम् | पङ्क्तिः | अशुद्धिः | शुद्धिः | पत्रम् | पङ्क्तिः |
| सत्ययासत्य | सत्यया-सत्य | २-१ | १३ | य इह | य गिहि | ६७-१ | ६ |
| वहुओ | वहुओ | ३-१ | १० | धणिणा | वणिणा | ७०-१ | ३ |
| संगं | संगो | १०-२ | ४ | दधौघा | दधौघां | १०२-१ | ६ |
| मीसिं | मेसिं | १०-२ | ११ | एसो | एसो, | ११२-१ | ८ |
| तहाहभव | तहाभव | ३९-१ | १० | विश्वस्तः | विश्वस्तः ॥ | ११२-२ | १४ |
| कुंडं | कुंडं | ४१-१ | १० | प्रतौ | प्रतौ । | ११५-१ | १२ |
| सुप्रतन | सुप्रयतन | ४८-१ | १३ | वाव[रा] | वावा[रा] | १२२-१ | २ |
| युषं, सा | युषं सा, | ५१-१ | १ | ८ ॥ | ॥ ८ | १२२-१ | १४ |
| शास्विनां | शाखिनां | ६१-१ | १३ | निरनीकु | नीरनिकु | १३५-१ | १० |
| मृगेन्द्र वृन्दं | मृगेन्द्रवृन्दं | ६४-२ | १२ | चउरगुणो | चडइ गुणो | १३८-२ | ९ |

| अशुद्धिः | शुद्धिः | पत्रम् | पङ्क्तिः |
|------------------------|------------------------|--------|----------|
| विह | विहं | १४१-२ | ८ |
| सम्पादम | सम्पादन | १५०-२ | १३ |
| लोचना | लोचनौ | १५४-१ | १३ |
| स्तत्त्र यत्नः प्र० | स्तत्र प्रयत्नः खं० | १८३-१ | १४ |
| यं संपं | | | |
| विववज्जयं | विवज्जियं | १८४-२ | ६ |
| अनिरं वारि | अनिवारि | १९२-१ | १३ |
| नयरम्मि | नयरम्मि, | १९३-१ | ५ |
| त्कराः'- | त्कराः' | १९३-१ | १४ |

| अशुद्धिः | शुद्धिः | पत्रम् | पङ्क्तिः |
|-------------|-------------------------|--------|----------|
| मायंगं | मायंग | २०२-२ | २ |
| ख० | खं० | २०२-२ | १४ |
| आवयं | आवयं | २०७-१ | ३ |
| वैतो | वैतो | २०७-१ | १० |
| व्यति | [तद्]व्यति | २१७-१ | १० |
| कृतंसवि | कृतसंवि | २२६-१ | १३ |
| पृथ्वीवलयम् | ० | २७९-१ | १४ |
| कुवलयं- | कुवलयं- पृथ्वीवलयम्, | २७९-१ | १४ |
| | | | |
| पिवि | पिविं | २८८-२ | १० |

| विषयः | पत्रम् |
|--|--------|
| ४५ चतुर्थअतिथिसंविभागशिक्षात्रतविषये नरदेव- देवचन्द्रादिकथानकम् | ३१९-२६ |
| ● अतिथिसंविभागस्य स्वरूपम् | ३१९ |
| ● युगादिजिनस्तुतिः | ३२२ |
| ४६ द्वादशावर्त्तवन्दनकफलवर्णनायां शिवचन्द्र- चन्द्रदेवकथानकम् | ३२६-३१ |
| ● द्वादशावर्त्तवन्दनकस्य स्वरूपम् | ३२६+२८ |
| द्वादशावर्त्तवन्दनकगुणे कृष्णस्य कथानकम् | ३२९ |
| वन्दनकविधानोपदेशः | ३३१ |
| ४७ प्रतिक्रमणगुणचिन्तायां सोमदेवकथानकम् | ३३२-३६ |
| ● प्रतिक्रमणस्य स्वरूपम् | ३३२ |
| अध्वदृष्टान्तः | ३३३ |

| विषयः | पत्रम् |
|---|--------|
| नरदेवादीनां पूर्वभवकथानकम् | ३२४ |
| ● अतिथिसंविभागत्रतस्य स्वरूपं तदतिचाराश्च | ३२४ |
| अतिथिसंविभागत्रतस्य माहात्म्यम् | ३२६ |
| प्रतिक्रमणस्य माहात्म्यम् | ३३६ |
| ४८ कायोत्सर्गविधानचिन्तायां शशिराज- कथानकम् | ३३७-४३ |
| ● कायोत्सर्गस्य स्वरूपम् | ३३७+३८ |
| उदितोदयनरपतेः कथानकम् | ३३९ |
| कायोत्सर्गस्य माहात्म्यम् | ३४३ |
| ४९ प्रत्याख्यानव्यतिरेकचिन्तायां भानुदत्त- कथानकम् | ३४३-४९ |